



Hargharpanditji

॥ श्री पार्वति व्रत कथा ॥

ॐ उमायै नमः

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री पार्वति व्रत कथा ॥

एक समय पार्वती जी ने भगवान शिव से पूछा—हे नाथ, ऐसा कौन सा व्रत है जिससे स्त्रियों को अखण्ड सौभाग्य, सुख, समृद्धि और मनोवांछित वर प्राप्त हो?

तब भगवान शिव बोले—हे गिरिजा, जो स्त्री श्रद्धा और भक्ति से आपका व्रत करती है, उसे सौभाग्य, सुशील पति, पुत्र, धन, सुख और परिवार की रक्षा प्राप्त होती है।

प्राचीन समय में एक निर्धन ब्राह्मण कन्या थी। वह प्रतिदिन पार्वती जी का पूजन करती, जल अर्पित करती, दीप जलाती और यह प्रार्थना करती—हे माता, मुझे उत्तम जीवन दो।

माता पार्वती जी उसकी भक्ति से प्रसन्न हुईं और स्वप्न में दर्शन देकर कहा—तू मेरा व्रत कर, तेरा कल्याण होगा।

कन्या ने नियमपूर्वक व्रत किया। कुछ समय बाद उसका विवाह एक सद्गुणी, धनवान और धर्मात्मा पुरुष से हुआ। घर में सुख-समृद्धि बढ़ी, संतान हुई, रोग-दोष दूर हुए।

जो स्त्री या पुरुष श्रद्धा से पार्वती जी का व्रत, कथा और पूजन करता है, उसके जीवन के संकट दूर होते हैं और मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं।

व्रत विधि

प्रातः स्नान करें
माता पार्वती जी की प्रतिमा/चित्र स्थापित करें
रोली, अक्षत, पुष्प, दीप, नैवेद्य अर्पित करें
कथा सुनें या पढ़ें
आरती करें
प्रसाद बाँटें

फलश्रुति

अखण्ड सौभाग्य, वैवाहिक सुख, संतान, शांति, समृद्धि, रक्षा।

॥ इति सम्पूर्णम् ॥